P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्राचीन एवम् आधुनिक राम काव्य में 'स्त्री विमर्श'

सन्दीपना शर्मा
सहायक अध्यापक,
हिन्दी विभाग,
डी0ए0वी0 कॉलेज,
जालन्धर

सारांश

राम कथा भारतीय संस्कृति की अनुपम धरोहर है। प्राचीन काल से ही भारतीय जन–मानस जब–जब अंधेरो में भटका, वह राम कथा रूपी सागर से प्रकाश के मोती चुनता रहा और अपनी जीवनधारा को उस से सम्पृक्त कर तमाम चुनौतियों का सामना करता रहा। प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक प्रायः सभी साहित्यकारों ने राम कथा में स्त्री पात्रों का चित्रण प्रायः अपने–अपने ढंग से किया है और सभी ने उस के उदात्त, आदर्श, उच्च व कर्मठ तथा साहसी रूपों की ही व्यंजना की है। परन्तु आधुनिक युग तक आते–आते सामाजिक परिस्थितियों मे परिवर्तन के साथ–साथ साहित्यकारों के विचारो में बदलाव आया, और बदलाव आया राम कथा के नारी पात्रों की संरचना एवम् अस्तित्व में। परिणामस्वरूप आदर्श एवम् उदात्त नारी के स्थान पर कर्मठ एवम् पुरुष मुक्त स्वतन्त्र नारी ने स्थान ले लिया। साहित्य के इस बदलाव ने अपने सभी पात्रों के माध्यम से आधुनिक जगत् के स्त्री विमर्श को एक नई दिशा प्राप्त करने के लिए विवश कर दिया।

मुख्य शब्द : स्त्री विमर्श, आदर्श पवित्रता, विवेकवान, समर्पणशीला, युग धर्म की रक्षिका।

प्रस्तावना

राम कथा को 'भारतीय संस्कृति का रूपक' कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस में सारे नारी पात्र अपनी विशिष्टता लिए हुए हैं, क्योंकि उन में भारतीय मूल्यों के लिए असीम आस्था है। यदि प्राचीन और आधुनिक राम कथा के सम्पूर्ण नारी पात्रों पर दृष्टिपात करें तो प्रत्येक नारी पात्र नारी विमर्श के विभिन्न कोनों को इंगित करता है। सभी पात्र अपनी एक विशिष्ट गरिमा, अस्तित्व एवम् चिन्तन लिए हुए है। सभी साहित्यकारों ने इन्हें साहित्योचित, समयोचित एवम् पात्रोचित महिमा प्रदान की है। परन्तु जहां ये सभी पात्र तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों, समस्याओं एवम् मूल्यों को उद्घाटित करते हैं, वहां दूसरी ओर नारी सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रतिपादित करते हुए बहुत सारे नारी विषयक प्रश्न चिन्ह भी प्रस्तुत करते हैं। जो कि नारी विमर्श को सीधे–सीधे चुनौती देते हैं। प्रस्तुत विषय कुछ ऐसे ही ज्वलंत प्रश्नों को विमर्श के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. सदियों से चली आ रही नारी की सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तनों का उद्घाटन ।
2. प्राचीनकाल से नारी के उदात्त, आदर्श, त्याग एवम् बलिदानमयी पात्रता का आधुनिक परिस्थितिजन्य परिवेश में उस की श्रेष्ठता के साथ पुनः प्रतिपादन।
3. अलग–अलग नारी पात्रों के माध्यम से नारी जीवन के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करना।
4. साहित्य के बदलते स्वरूप एवम् पात्रों के अस्तित्व की महिमा मंडन पर आधुनिकता का प्रभाव।

राम कथा भारत की आदि कथा है, जिसे 'भारतीय संस्कृति का रूपक' कह दिया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। राम कथा के सभी पात्र भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को महिमा प्रदान करते दिखाई देते हैं। विशेष रूप से नारी पात्र अपनी विशिष्टता लिए हुए हैं। उन में भारतीय मूल्यों के लिए असीम आस्था है, त्याग की प्रतिमूर्तियाँ है, आदर्श पतिव्रता है, विवेकवान, समर्पणशीला है, कर्त्तव्यपरायणा व युग धर्म की रक्षिका भी है। समय आने पर अपनी श्रेष्ठता भी सिद्ध करती है। सम्पूर्ण कथानक को आदर्श मंडित करने में नारी पात्रों की विशेष भूमिका रही है। राम कथा में वर्णित पात्र–सीता, कौशल्या, कैकेयी, उर्मिला, मंदोदरी, माण्डवी, श्रुतिकीर्ति, सुमित्रा, मंथरा, शूर्पणखा, शबरी आदि नारी

पात्र इतने भव्य रूप में चित्रित हुए हैं कि पुरूष भी उन्हीं के पथ का अनुसरण करते हैं। सीता के आदर्श से प्रभावित लक्ष्मण कहते हैं–

''नारी के जिस भव्य भाव का, स्वाभिमान भाषी हूँ मैं।
उसे नरों में भी पाने का, उत्सुक अभिलाषी हूँ।''[1]

आधुनिक राम काव्यों के नारी चरित्रों में सीता का चरित्र सब से अधिक संघर्षमय रहा है। सीता पतिव्रता, त्याग एवं शील की मूर्ति है। 'साकेत', 'उर्मिला' 'वैदेही बनवास' आदि काव्यों की पालन करने वाली आदर्श भारतीय नारी में चित्रित है। उन के चरित्र में मानव–मूल्यों के प्रति आस्था है। भरत जब चित्रकूट पहुंचता है, तो सीता माँ के समान आशीर्वाद देती है कि वे राम से अधिक यशस्वी बनें।

''मैं अम्बा सम आशीष तुम्हें दूँ, आओ।
निज अग्रज से भी शुभ्र सुयश तुम पाओ।''[2]

स्त्री का स्वभाव विनयशील, लज्जाशील, संयमशील एवम् सहिष्णु होता है। स्त्री दया, ममता, माया, प्रेम, श्रद्धा, करुणा, लज्जा आदि गुणों से युक्त होती है। भारतीय संस्कृति में स्त्री में इन्हीं गुणों की प्रशंसा की गई है। तुलसीदास 'रामचरितमानस' में सीता में इन्हीं गुणों को निरूपित करते हैं। सीता श्री राम तथा लक्ष्मण के साथ जब वन गमन करती है तब गाँव की ग्रामीण स्त्रियाँ सीता जी से पूछती है कि ये तुम्हारे कौन हैं? तब सीता लज्जित होकर कहती है–

''बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी।
पिय तन चितई भौंह करि बांकी।।
खंजन मंजु तिरीछे नयनहि।
निज पति कहेउ तिन्हहि सिय सयननि।।''[3]

यहाँ सीता अपने पति का नाम नहीं लेती, बल्कि अपने मुख को आँचल से ढक कर श्रीराम की ओर निहार कर भौंहें टेढ़ी करते हुए इशारे से कहती है कि ये मेरे पति हैं। भारतीय संस्कृति में इसी चीज़ को महत्त्वपूर्ण माना गया है। तत्कालीन परिवेश में तुलसीदास द्वारा वर्णित भारतीय स्त्री का इस प्रकार का व्यवहार एक दृष्टि से उचित जान पड़ता है किन्तु स्त्री विमर्श भारतीय संस्कृति की इन धारणाओं का, स्त्री के ऐसे आदर्श स्वभाव का विरोध करता है।

तुलसीदास जी नारी विमर्श के अनेक आयामों को लेकर अपनी राम कथा का ताना–बाना बुनते हैं। वहां कथा सूत्र तो परम्परा से गृहीत है, लेकिन रचना–तंत्र और रचना–रहस्य, तुलसी का अपना है। वे नारी अस्मिता से जुड़े विविध प्रसंगों को उठा कर नारी–विमर्श की धारा को कई आयाम देते हैं। सीता स्वयंवर, सीता का वनगमन, शूर्पणखा प्रसंग, सीता हरण प्रसंग, अहिल्या प्रसंग, तारा, मंदोदरी आदि के प्रसंग नारी विमर्श के विविध आयामों की बड़े सशक्त ढंग से व्यंजना करते हैं। तथापि आज का साहित्यकार परम्परा से मुक्त होकर नवीन विचारधारा एवम् नारी को पुरुष के समकक्ष राम कथा में स्थापित करने का प्रयास करता है। जबकि तुलसी पर नारी–विरोधी होने का आरोप लगाने वाले तुलसी की काव्य–चेतना को नहीं देख पाते, क्योंकि उनकी आँखों पर तो परम्परा–विरोध की पट्टी बंधी हुई है। वे नहीं देखते कि तुलसी किस प्रकार नारी के शील की जकड़न की कसमसाहट नारी के द्वारा ही व्यक्त करते हैं। तुलसी जानते हैं कि शील के नाम पर सामाजिक वर्जनाओं ने नारी की मानसिकता को इस प्रकार जकड़ दिया है कि उस के मन में लड़की होने का एहसास उन्हें हमेशा विवशता का बोध कराता है। यहाँ तक कि अपने जीवन साथी के वरण के लिए भी वह स्वतन्त्र नहीं है। वरण तो दूर की बात अपने मन की बात वह किसी से कह भी नहीं सकती कि उसे कैसा वर चाहिए।

सीता स्वयंवर प्रकरण वास्तव में स्वयंवर प्रथा के अन्तर्गत वर के चयन में एक भ्रांति उत्पन्न करता है, ऐसा प्रतीत होता है कि मानों नारी स्वयंवर के आवरण में रहते हुए भी अपने हृदय के बन्धनों से मुक्त नहीं है। जबकि सीता स्वयंवर प्रकरण में ये धारणा अनुचित लगती है। तुलसी जी इस अवधारण को अच्छी तरह जानते हैं। वे इस प्रकरण को राम कथा में उठाते हैं। 'गीतावली' में तुलसीदास की सीता अपने होने वाले पति के सम्बन्ध में अपनी कामना प्रकट करना चाहती है ; लेकिन लड़की होने के बोध और तज्जन्यशील के बंधन में जकड़ी उस की विवशता उसे अपनी कामना व्यक्त करने से रोक देती है, और अपने आप को विधाता के हाथों छोड़ देती है। जबकि आधुनिक युग की मानसिकता के अनुसार स्त्री अपने वर के चयन के लिए अधिकांशतः स्वतन्त्र है। बल्कि वह सीता की भांति पिता प्रतीज्ञा से बंधी न होकर अपने ऐच्छिक वर के लिए पिता को बेझिझक अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करती है।

यही कारण है कि नरेश मेहता के काव्य में 'संशय की एक रात' की सीता का चिन्तन युगानुरूप बदल गया है। वहां पर सीता साधारण जन की स्वतन्त्रता का प्रतीक है। हनुमान के अनुसार सीता का अपहरण साधारण जन की स्वतन्त्रता का अपहरण हैः–

''रावण अशोक वन की सीता
हम साधारण जन की अपहृत स्वतंत्रता।''[4]

'अग्निलोक' की सीता राम को महत्वकांक्षी कह कर उस से सारे सम्बन्ध तोड़ना चाहती है। इसीलिए सीता राम का पूर्ण रूप से त्याग कर मुक्त एवं स्वतन्त्र बनना चाहती है। आधुनिक नारी परम्परागत मूल्यो एवं आदर्शों को नकारते हुए स्वयं को न केवल स्वतंत्र घोषित करती है; बल्कि नारी पराधीनता की अवधारणा से बिल्कुल मुक्त रहना चाहती है :–

''अब मैं स्वतंत्र हूँ, मुक्त हूँ
अपने–आप से पूर्ण हूँ
आप अपनी निर्देशिका, आप अपनी कीर्ति
और आप अपनी भोक्ता हूँ।''[5]

तुलसीदास को नारी निन्दक भी कहा जाता है। उन की रचनाओं में तमाम उक्तियाँ इस से सम्बन्धित मिल जाती हैं :–

''नारि सुभाउ सत्य सब कहहिं।
अवगुन आठ सदा उर रहहिं।।
बिधिहु न नारी गति जानी।
सकल कपट अध अवगुण खानी।।''[6]

नारी मध्यकाल में माया का प्रतीक बन कर आयी है। इसलिए नारी की निन्दा सभी कवियों ने की है। हमें

इस बात को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि मध्यकाल में वर्गों के अनुसार नारियों की सीमा–रेखाएँ थी। फिर भी एक सामान्य सत्य यह भी था कि सामाजिक तथा वैयक्तिक धरातल पर मध्यकालीन नारी को भोगी सामन्तों तथा कर्मचारी तांत्रिकों ने सचमुच कामयष्टि बना दिया था। सामाजिक कुष्ठाओं और बन्धनों की जंजीरों ने उसे अबला बना दिया था, व्यापक अनुभवों के अभाव तथा घर में केवल पुत्र पालन के पेशे की अधिकारिणी होने के नाते नारी सचमुच जड़, मूर्ख और अज्ञानी हो गई थी। इसीलिए तुलसी ने नारी को एक साथ सहज, अपावन, जड़, अज्ञ, माया, अबला, झगड़े की जड़, प्रबला घोषित किया है।

तुलसीदास का अन्तर्विरोध यह है कि शबरी के व्यक्तित्व को ऊँचा उठाते हैं, भक्ति के वशीभूत होकर लेकिन, 'अधम ते अधम, अधम अति नारी' कह कर उस के नारी व्यक्तित्व को नीचे गिरा देते हैं। तुलसीदास का युग मध्यकालीन युग था। मध्यकाल में नारी को काम–वासना, भोग–विलास की वस्तु के रूप मे चित्रित किया गया। यही कारण है कि तुलसीदास नारी को अधम और पतिता कहने पर भी संकोच नहीं करते। परन्तु तत्कालीन परिस्थितियों में रहते हुए उन्होंने जिस मानस की कल्पना की थी उस में उन्होंने नारी के प्रायः उदात्त और आदर्श रूप को भी चित्रित किया है।

कौशल्या सरल हृदय माता है। भरत के कारण राम को 14 वर्ष का बनवास मिला, फिर भी उस का स्नेह भाव रामवत् ही है। वह भरत में ही राम का स्वरूप पा लेती है और माँ का आदर्श चरित्र उपस्थित करती हैः–

''मिल गया मेरा मुझे तू राम,
तू वही है, भिन्न केवल नाम।''[7]

आधुनिक राम काव्य में कैकेयी का चरित्र अपना एक अलग विशिष्ट महत्त्व रखता है। उस के मन में राम के प्रति भरत से ज्यादा स्नेह है ; लेकिन मंथरा की बातें उसको झकझोर देती हैं और वो विचलित हो उठती है। वह सोचती है कि उस ने कभी स्वार्थ का आचरण नहीं किया। फिर दशरथ ने उस पर और भरत पर संदेह क्यों किया? यह विकराल मानसिक संघर्ष ही कैकेयी को भाव शून्य, निर्मम, निष्ठुर आचरण की आसुरी शक्ति प्रदान करता है। कैकेयी ने मातृत्व के वशीभूत होकर अपराध किया था, परन्तु पश्चाताप की अग्नि में तप कर कैकेयी का हृदय पवित्र भी हो गया था।

राम काव्य परम्परा में 'उर्मिला' का सफल रेखांकन 'मैथिली' और 'नवीन' की 'साकेत' और 'उर्मिला' में मिलता है ; जिस में उस के उपेक्षित व्यक्तित्व को उभारा गया है। 'साकेत' का नवम् सर्ग उर्मिला के विरह–विषाद की चरम निदर्शन है। उर्मिला में क्षत्राणी का व्यक्तित्व भी दृष्टिगोचर होता है। वह विरहणी होते हुए भी कर्त्तव्य के लिए संयमशील है। वह अपने प्रेम और सुख का बलिदान कर त्याग का महान् आदर्श उपस्थित करती हैः–

''कहा उर्मिला ने हे मन।
तू प्रिय पथ का विघ्न न बन।
आज स्वार्थ है त्याग भरा
हो अनुराग विराग भरा।''[8]

'उर्मिला' एक ऐसी उपेक्षिता स्त्री चरित्र है, जो पतिव्रता धर्म एवम् आदर्श के नाम पर पति की आज्ञा का पालन करती है।

''मानवता की पाद पीठ पर
तुम को न्योछावर करके
रो लेगी उर्मिला तुम्हारी
चुपके–चुपके जी भर के।''[9]

जहाँ एक ओर 'मैथिली शरण गुप्त' और 'बाल कृष्ण शर्मा नवीन' ने 'साकेत' और 'उर्मिला' के अर्न्तगत नारी को त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति, संयमी, सहिष्णुता, उद्यमशील, कर्मठ, परिश्रमी एवम् समझदार नारी के रूप में चित्रित किया है ; वहीं प्राचीन काव्य के अर्न्तगत नारी को पुरुषगामीनी एवं पुरुषदासी के रूप में ही उस का चित्रांगन हुआ है। आज की नारी भले ही स्वतन्त्रता की द्योतक बनी है; परन्तु उस में प्राचीन गरिमा, आदर्श एवम् 'साकेत' व 'उर्मिला' की नारी जैसी उदात्ता, कर्मठता पराक्रमशीलता का अभाव नज़र आता है। वह उन्मुक्त जीवन जीना चाहती है। परन्तु अपने सामाजिक दायित्व से मुक्त होकर। जबकि किसी भी देश की नारी अपने सामाजिक दायित्व से मुक्त होकर अपने अस्तित्व को स्थापित नहीं कर पाती। अतः राम कथा के प्राचीनतम एवम् आधुनिकतम नारी स्वरूप के तमाम नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण पर भलीभांति विचार करने पर सही विमर्श निकलता है कि नारी अपने किसी भी रूप (माँ, बेटी, बहन, पत्नी, प्रेमिका) में हो उसे उच्च मानवीय मूल्यों का पालन करते हुए अपने आप को एक स्वतंत्र नारी के रूप में प्रतिष्ठित करना होगा।

निष्कर्ष

अन्त में यह कहा जा सकता है कि राम काव्य के आदि स्वरूप से लेकर आधुनिक काल तक के सभी कवियों ने प्रायः स्त्री के उदात्त रूप को ही चित्रित किया है। परन्तु यहाँ यह न भूलना होगा कि प्रत्येक समय की राम कथा के कवि अपनी युगीन परिस्थितियों से प्रभावित रहते आए हैं। प्रत्येक युग की सामाजिक परिस्थितियाँ नारी स्थिति एवं प्रकृतियाँ भिन्न–भिन्न रही हैं। उदाहरणार्थ तुलसीदास के समय जब राम कथा की अभिव्यक्ति उन के अपने ही विभिन्न ग्रन्थों में हुई तब उस काल में स्त्री केवल भोग विलासिता, दासता एवं बंदनी के रूप में ही जान पड़ती थी। ऐसे में कवि ने स्त्री को इन सब चीज़ों से परे उस की प्रतिष्ठा को उजागर करने का प्रयास किया और पुरुष के समकक्ष स्थापित करने की चेष्ठा की। परन्तु प्राचीन काल से चली आ रही परम्पराओं के चलते अपने काव्य में कहीं–कहीं नारी की प्रताड़ना करने से गुरेज नहीं की। वह समय की धारा के साथ परिवर्तित होते–होते और आधुनिक काल तक आते–आते प्रायः सभी कवि, मैथिली शरण गुप्त, भारत भूषण अग्रवाल, बाल कृष्ण शर्मा नवीन आदि ने स्त्री की अन्तःश्चेतना एवं अन्तरशक्ति को दृढ़ता प्रदान की एवं पुरुष के पौरूष एवम् कमज़ोरियों को चुनौती दे डाली और नारी को उदारता प्रदान करते हुए नारी को ही नारी की स्थिति का उत्तरदायी प्रमाणित कर दिया। आधुनिक स्त्री विमर्श इस बात का विरोध

करता है क्योंकि समय और आधुनिकता बनाम उन्मुक्तता ने साहित्य और समाज दोनों को प्रभावित किया है। इसे हम सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन भी कह सकते हैं, जो मूल्य प्राचीनकाल में गरिमा से मंडित थे, वे आधुनिक युग में प्रगतिशील विचारों ने खंडित कर दिये ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *मैथिली शरण गुप्त : साकेत : पृ0 94*
2. *मैथिली शरण गुप्त : साकेत : द्वितीय सर्ग : पृ0 57*
3. *तुलसीदास : रामचरितमानस : अयोध्या काण्ड : 16/3–4*
4. *नरेश मेहता : संशय की एक रात : पृ0 64*
5. *भारत भूषण अग्रवाल : अग्नि लोक : पृ0 53*
6. *तुलसीदास : रामचरितमानस*
7. *मैथिली शरण गुप्त : साकेत : चतुर्थ सर्ग : पृ0 100*
8. *मैथिली शरण गुप्त : साकेत : चतुर्थ सर्ग : पृ0 110*
9. *बाल कृष्ण शर्मा नवीन : उर्मिला : तृतीय सर्ग : पृ0 268.*